नईदुनिया e-paper

Image View | Text View | Comment | Email | Print

Published in 21 Dec-2011 | Print Edition of Naidunia

Page Zoom:

व्यवहारिक होनी चाहिए शिक्षा : प्रो. राजगोपाल

■ मैक्सिको के प्रोफेसर ने नईदुनिया से की विशेष चर्चा

रायपुर (निप्र)। भारतीय शिक्षा पद्धति सिद्धांत से व्यवहार की ओर जाती है, जिसे वर्तमान समय में बदलने की आवश्यकता है। वास्तव में तकनीकी शिक्षा या प्रबंधन जैसे विषयों की शिक्षा को व्यवहारिक बनाने की जरूरत है। विदेश में इस पद्धति को अपनाया जा रहा है। यह कहना है मोन्टेरी इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड हायर एजुकेशन, मैक्सिको के प्रो. राजगोपाल का। प्रो. राजगोपाल मंगलवार को रायपुर स्थित राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) में ''कन्वर्जेन्स ऑफ टेक्नोलॉजी

मैनेजमेंट एण्ड ग्लोबल बिजनेस'' विषय पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में व्याख्यान देने पहुँचे थे।

मैक्सिको की शिक्षा पद्धति पर प्रो. राजगोपाल ने बताया कि वहाँ लोग एप्लाइड लर्निंग पर कार्य करते हैं। इसमें अलग-अलग तरह के समस्या की भिन्नता को लिया जाता है। इसमें किसी विशेष केस (समस्या) को लेकर पहले उसका विश्लेषण किया जाता है। इसके बाद उपयुक्त रणनीति बनाकर उसे हल किया जाता है।

इस समस्या को सिद्धांत से जोड़ा जाता है। यह तरीका वहाँ पढ़ाई के लिए अपनाया जाता है। उन्होंने बताया कि विदेशों में वर्तमान एवं भविष्य के आधार पर पढ़ाई होती है, जिसमें भूतकाल केवल संदर्भ के रूप में शामिल होता है।

तकनीकी छात्रों ने जाना प्रबंधन : रायपुर एनआईटी भले ही तकनीकी शिक्षण संस्थान हो लेकिन प्रबंधन के गुरु को सुनने के लिए छात्र यहाँ छह घंटे से अधिक समय तक अपनी जगह में बैठे रहे। कार्यशाला की अध्यक्षता संस्थान के प्रभारी निदेशक डॉ. एएम रवानी ने की। कार्यशाला के संयोजक डीन (रिसर्च एण्ड प्लानिंग) डॉ. एएस ठोके थे।

स्कूल से कॉलेज तक पढ़ाई रायपुर में

मैक्सिको में बतौर सीनियर प्रोफेसर, श्री राजगोपाल का नाता छत्तीसगढ़ से काफी पुराना है। प्रो. राजगोपाल ने अपने स्कूल से कॉलेज तक की पढ़ाई छत्तीसगढ़ प्रदेश रायपुर में ही की है। शासकीय बहुउद्देश्यीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, रायपुर से पहली से बारहवीं की पढ़ाई करने के बाद पीएचडी की डिग्री उन्होंने पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय से ली।

रायपुर में आया काफी बदलाव

प्रो. राजगोपाल ने पुराने दिनों को याद करते हुए कहा कि अपने बचपन से जवानी की दहलीज तक का सफर उन्होंने रायपुर में तय किया। इस दौरान रायपुर में एक अलग ही रूप में था। लेकिन 1984 में पीएचडी की डिग्री हासिल करने के बाद यहाँ से जाने के बाद रायपुर में बहुत कुछ बदल गया।